गुरू वंदना केन्द्र "सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई "

" टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम "

TIPS OF THE FIELD PROGRAMME

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 211वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 18 फरवरी 2008 को एक विशेष कार्यक्रम 'टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम 'का शुभारंभ हुआ। इस कार्यक्रम के माध्यम से विभिन्न गुरू वंदना केन्द्रों में समाज के प्रतिष्ठित व अनुभव शील सम्मानीय जन अपने अपने कार्य क्षेत्र का संक्षिप्त जानकारियां क्रम बध गुरू वंदना के अवसर पर प्रदान करते हैं ।

(टिप्स क्र 1):- 211वें गुरू वंदना (दिनांक 18 02 2008)

टिप्स आफ दी फिल्ड कार्यक्रम शुभारंभ के अवसर पर माननीय श्री डी एल रात्रे जी . अवकाश प्राप्त जिला पंजियक (DISTRICT REGISTAR) दुर्ग . " पंजियन क्यों और कैसे " विषय पर अपना कार्य क्षेत्र का अनुभव समाज को प्रदान किये।उन्होंने चल और अचल संपत्ति को परिभाषित करते हुये पंजियन की जरूरत पर विस्तार से प्रकाश डाला । पंजियन संबंधी विभिन्न प्रकिया के बारे विस्तार से जन समुदाय को संबोधित किये ।उपस्थित लोगों ने अनेक प्रश्न कर अपनी अपनी संकाओं का भी समाधान किये ।इस कार्यक्रम में अधिकांश गुरू वंदना केन्द्रों के कार्यकर्त्ता गण भी काफी तादाद में उपस्थित थे ।इस अवसर पर सर्व प्रथम श्री रात्रे जी का स्वागत श्री एम एल भतरिया द्वारा पुष्प गुच्छ से किया गया । श्री एफ आर जनार्दन ने इस कार्यक्रम के महत्ता पर प्रकाश डाला । श्री रात्रे जी ने भविष्य में ग्रामीण क्षेत्रों में भी अपनी सेवाए देने का भी आश्वासन दिये ।

(टिप्स क्र 2):- 212वें गुरू वंदना (दिनांक 25 02 2008)

212 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 25 फरवरी 2008 को डां ए डी बनर्जी क्षय रोग विशेषज्ञ. सेक्टर 9 भिलाई हास्पीटल ने अपना अनुभव "क्षय रोग (टी.बी.)के कारण एवं निवारण" विषय पर जनता को टिप्स प्रदान किये ।श्री जैज लाल राय अध्यक्ष गुरू घासीदास सेवा समिति ने पुष्प गुच्छ से डां बनर्जी का स्वागत किया ।डां बनर्जी ने क्षय रोग के कारण पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला ।उन्होंने उदाहरण देकर स्पष्ठ करते हुये बताया कि जो भी मनुष्य बाबा गुरू घासीदास द्वारा बताये गये रास्ते पर चलता है और अपने आदत व्यवहार में उनके द्वारा प्रतिपादित उपदेश व अमरवाणियों को अपनाता है . उसको कभी क्षय और एडस की बीमारी हो ही नहीं सकती ।अतः उन्होंने सभी को बाबा जी के रास्ते पर चलने का सलाह दिये ।इस अवसर पर बाल दास गुरू विशेष रूप से उपस्थित थे ।गिरौद पुरी मेला की व्यवस्था के ऊपर विस्तृत रूप से चर्चा हुयी ।चर्चा के दौरान बाल दास गुरू ने मेला के दौरान अव्यवस्था का जिक किये और इसका जिम्मेदार मेला समिति व शासन प्रशासन को ठहराये ।इस विषय पर सर्व श्री मोहन लाल भतरिया . राजन खुटेल . पुरानिक लाल चेलक . एफ आर जनार्दन . धनी राम मंडले . रामदयाल देशलहरा. जे आर सोनवानी . वेदराम दिव्या

. एस डी बघेल . एस के बंधे . डां शोभाराम बंजारे. एल डी जोशी. राजेश बंजारे राजेन्द्र बंजारे. गोविंद बर्मन. जी एल टंडन आदि लोगों ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।

(टिप्स क 3):- 213वें गुरू वंदना (दिनांक 03 03 2008)

213 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 3 मार्च 2008 को माननीय श्री एस एल जांगडे सहायक श्रम आयुक्त दुर्ग अपना अनुभव " श्रमिक समस्या एवं निदान " विषय पर जनता को टिप्स प्रदान किये। उन्होंने बताया कि मालिक और नौकर (श्रमिक)का संबंध हमेसा से विवाद का विषय रहा है । विभिन्न श्रमिक कानूनों के माध्यम से मालिक और नौकर(श्रमिक) के संबंध को संतुलित किया गया है । लेकिन श्रमिकों को श्रमिक कानूनों की जानकारियां नहीं होने से वे मालिकों के अन्याय अत्याचार एवं शोषण के शिकार होते रहें हैं ।जांगडे जी ने विभिन्न श्रमिक (पुरूष. महिला एवं बच्चों) कानूनों जिकर किये ।उन्होंने विशेष कर असंगठित क्षत्रों में श्रमिकों को संगठित कर उनके हितों के लिये श्रम विभाग से संपर्क कर विशेष प्रावधानों का लाभ उठाया जा सकता । उन्होंने भविष्य में भी सलाह एवं सहयोग देने का आश्वासन दिये ।

(टिप्स क 4):- 214वें गुरू वंदना (दिनांक 10 03 2008)

214 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 10 मार्च 2008 को माननीय श्री टी दास प्रबंधक विधि विभाग भिलाई इस्पात संयंत्र ने अपना अनुभव " जीवन में विधि की सार्थकता " विषय पर जनता को टिप्स प्रदान किये। उन्होंने बताया कि जिन्दगी के प्रत्येक कदम को विधि(कानून) पीछा करता है । इसीलिये प्रत्येक नागरिक को विधि का ज्ञान का होना आवश्यक है ।भारत देश में 26 जनवरी 1950 को डॉ बी आर आंबेडकर द्वारा निर्मित भारतीय संविधान ही सवोच्च कानून है । कोई भी कानून भारतीय संविधान के दायरे के बाहर नहीं हेा सकता (No law is above the constitution)। यह भी सत्य है . कि विधि का अज्ञानता भी अक्षम्य है (Ignorance of law is of no excuse) . विभिन्न माध्यमों से जनता को विधि के संबंध में अनुभवियेां द्वारा जानकारियां देना भी नितांत आवश्यक है ।दास जी ने विभिन्न प्रकार के कानूनों का उदाहरण देकर उपस्थित जनों को समझाया । भिलाई इस्पात संयंत्र में प्रचलित विधियों का विशेष रूप से जिक किये ।श्री दास जी का पुष्प गुच्छों से स्वागत श्री देव प्रसाद नारंग एवं श्री दसरथ लाल जोशी ने किये ।उपस्थित जनों के प्रश्नों का संतोष पूर्ण उत्तर श्री दास जी ने दिये ।इस अवसर पर गुरू प्रसाद श्री एस एल जांगडे जी एवं श्री एल डी देशलहरा जी के परिवार से था ।

(टिप्स क 5):- 215वें गुरू वंदना (दिनांक 17 03 2008)

215 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 17 मार्च 2008 को डॉ श्रीमती चन्द्र कला जोशी . संचालिका श्री साई पैथालाजी लेब दुर्ग ने अपने अनुभव का टिप्स " वर्तमान जीवन पद्धति को संतुलन प्रदान करने में पैथालाजी लेब की भूमिका " विषय पर जनता को प्रदान किये।उन्होंने गुरू वंदना कार्यक्रम पर अपनी प्रतिकिया जाहिर करते हुये कहा कि मैंने अपनी अनुभव के टिप्स देने के

पहले ही गुरू वंदना में शामिल होकर बहुत कुछ सीख लिया । डां जोशी ने आगे बताया कि दुनियां के सारे डाक्टरोंको पैथालाजी की जरूरत होती है । किसी भी बीमारी के कारण को जानने के लिये पैथालाजी की जरूरत होती है । क्यों कि बिना बीमारी के कारण को जाने कोई भी डाक्टर बीमारी का उपचार शुरू नहीं करता । खुन . पेशाब आदि की जांच के पहले बताये गये सावधानियों का हेाना आवश्यक है । अथवा जांच का परिणाम गलत होने से दवाई के साथ ही उसका मात्रा उचित नहीं होने से सही उपचार नहीं हो सकता ।उन्होंने विभिन्न प्रकार के जांच हेमोग्लोबिन . सिकलिन . ब्लड ग्रुप . डायबेटिक . पिलिया . हार्ट . किडनी आदि के संबंध में विस्तृत रूप से चर्चा किये । उपस्थित जनों के प्रश्नों का भी संतोष प्रद उत्तर दिये । इस अवसर पर श्री मोहन लाल भतरिया ने डां जोशी का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया । श्री राजेन्द्र कुमार बंजारे एवं श्री पुरानिक लाल चेलक के परिवार की ओर से गुरू प्रसाद दिया गया ।

(टिप्स क 6):- 216वें गुरू वंदना (दिनांक 24 03 2008)

216 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 24 मार्च 2008. को श्री प्रशांत कुमार बंजारे . पत्रकार . स्टाफ रिपोर्टर अंग्रेजी दैनिक दी हितवादा . दुर्ग ब्यूरो ने अपना अनुभव का टिप्स " वर्त मान परिदृस्य में पत्रकारिता के आसार (SCOPE OF JOURNALISM IN THE PRESENT SCENARIO) " विषय पर जनता को प्रदान किये ।उन्होने बताया कि इलेक्ट्रानिक एवं प्रीन्ट मिडिया आज पत्रकारिता के महत्व पूर्ण अंग हैं ।दस साल पहले पत्रकारिता का परिदृश्य अलग था . आज का परिदृश्य अलग है । आज इस क्षेत्र में अवसर की भरमार है । उन्होंने स्पष्ट किया कि पत्रकारिता ड्रीम जॉब है . थोपने वाली काम नहीं ।खुद में इस क्षेत्र में रूचि होना आवश्यक है । पत्रकार बनने के लिये आवश्यक गुण के साथ ही वर्तमान में उपलब्ध अवसरों के बारे में भी जानकारी दिये । ओपन सेसन में लोगों के जिज्ञासा को भी शांत किये । इससे पत्रकारिता के प्रति लोगों का रूझान देखने को मिला ।में इस अवसर पर श्री मती कुंती पाटील ने श्री प्रशांत कुमार बंजारे का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया ।

(टिप्स क 7):- 217वें गुरू वंदना (दिनांक 31 03 2008)

217 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 31 मार्च 2008 श्री डॉ आर आर बारले . विशेषज्ञ नाक कान गला. सेक्टर 9 हास्पीटल बी एस पी भिलाई अपना अनुभव का टिप्स " नाक . कान . गला मानव शरीर केमहत्वपूर्ण अंग हैं क्यों और कैसे (EAR , NOSE & THROAT ARE IMPORTAT ORGANS OF THE HUMAN BODY WHY & HOW) " विषय पर जनता को टिप्स प्रदान किये ।नाक . कान व गला के महत्व पर प्रकाश डालते हुये अपना टिप्स मुंह और गले के केंसर के ऊपर केन्द्रित किये । केंसर के नाम से ही आम आदमी में दहसत पैदा हो जाता है ।इसलिये आम लोगों को केंसर के कारण व निवारण की जानकारियां आवश्यक है ।गुरू घासी दास जी केंसर मेडिकल विशेषज्ञ प्रतीत होते हैं । तभी तो उन्होनें शराब. तम्बाखू आदि नशा पान को मना किये थे . जो केंसर होने के प्रमुख कारण है ।उन्होंने आगे बताया कि 80 प्रतिसत कैंसर मुंह व गले के ही होते हैं । इस अवसर पर उपस्थित जनों ने कैंसर के लक्षण व उचित उपचार के बारे में जानना चाहा . जिसकों डॉ बारले ने उदाहरण देकर समझाया । श्री एच एल घिदोडे एवं डॉ ए डी

बनर्जी ने इस अवसर पर डॉ बारले का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया । गुरू प्रसाद श्री बी पी राऊतराय एवं श्री एल डी देशलहरा के परिवार से था ।

(टिप्स क 8):- 218 वें गुरू वंदना (दिनांक 07 04 2008)

218 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 7 अप्रेल 2008. को श्री मती गोमती राय . जे टी ओ बी एस एन एल सेक्टर 1 भिलाई अपना अनुभव का टिप्स " मोबाइल संचार का सशक्त माध्यम - उपयोग कब और कैसे ? (MOBILE A POWRFUL COMMUNICATION MEDIA WHEN & HOW TO USE) " विषय पर जनता को टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने संचार माध्यम के विकाश पर प्रकाश डालते हुये वर्तमान मोबाइल युग तक का विस्तार पूर्वक जानकारी दिये ।मोबाइल आज समाज के प्रत्येक वर्ग . अमीर से गरीब सभी की जरूरत हो गयी है ।सदुपयोग के साथ साथ हो रहे दुरूपयोग के बारे में भी जानकारियां प्रदान किये ।मोबाइल उपयोग के लिये सावधानियां रखना जरूरी है ।मोबाइल को दिल के पास रखना सबसे खतरनाक है । वाहन चलाते वक्त उपयोग ठीक नहीं है ।बरसात में बिजली कडकते समय मोबाइल का बंद होना सुरक्षित होता है । बंद हालत में ही चार्जिग करना चाहिये ।सवाल जवाब का भी सेसन चला ।इस अवसर पर श्री एस दास पूर्व अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायधीस एवं वर्तमान में अध्यक्ष जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण फोरम दुर्ग . डॉ शोभाराम बंजारे . श्री एम एल भतरिया . श्री जैज लाल राय . श्री टी दास . इं कमल कांत बंजारे . श्री अजीत बंजारे. श्री राजूलाल बंजारे श्री मंशा राम कुर्रे . श्री गोविन्द बर्मन. श्री सुरसेन कुर्रे . श्री त्रिलोचन डहरे. श्री हरि शंकर घृतलहरे . श्री भुवन दास कोसरिया . श्री आर के बंजारे .श्री टी आर टंडन .श्री बी पी राऊतराय . श्री मती कुन्ती पाटील . श्री मती पुष्पा घिदोडे. कु ममता घिदोडे आदि की गरिमामय उपस्थिति रही । श्री मती जमुना भतरिया एवं श्री मती वेदबाई गायकवाड ने इस अवसर पर श्री मती गोमती राय का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया । गुरू प्रसाद श्री एच एल घिदोडे के परिवार से था ।

(टिप्स क 9):- 219 वें गुरू वंदना (दिनांक 14 04 2008)

219 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 14 अप्रेल 2008. को श्री एफ आर जनार्दन सहायक महाप्रबंधक भिलाई इस्पात संयंत्र अपना अनुभव का टिप्स " मकान निर्माण में आवश्यक सावधानियां (ESSENTIAL PRECAUTIONS IN HOUSE CONSTRUCTION) " विषय पर जनता को टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि प्रत्येक मनुष्य के लिये रोटी कपडा व मकान की अत्यंत जरूरत होती है . चाहे वे किसी भी वर्ग से हो . अमीर हो या गरीब हो । आदमी को मकान निर्माण के पहले अपनी जरूरत के साथ ही साथ अपने आर्थिक साधन का आंकलन होना आवश्यक है ।काली मिटटी में मकान बनाते वक्त नीव पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है . इसमें किसी प्रकार की समझौता व कंजूसी नहीं होनी चाहिये ।मकान निर्माण सामाग्रियों का समुचित जानकारी जरूरी है ।लोहा के मात्रा से अधिक . लोहा कहां पर (ऊपर नीचे या बीच में) होना चाहिये इसको जानना बडा आवश्यक है । जहां जहां सिविल स्ट्रक्चरण में तनाव आती है या आने की संभावना हो वहां लोहा का होना आवश्यक है । विभिन्न सवालों का जवाब भी दिया गया । इस अवसर पर गुरू

प्रसाद श्री रामजी गायकवाड श्री अजीत बंजारे परिवार के सौजन्य से था । इस अवसर पर बडी संख्या में लोग उपस्थित थे ।

(टिप्स क 10):- 220 वें गुरू वंदना (दिनांक 21 04 2008)

220 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 21 अप्रेल 2008. को श्री ब्रम्हा नंद देशलहरा ट्रेफिक विभाग भिलाई अपना अनुभव का टिप्स " सुरक्षा के लिये ट्रेफिक नियम की जानकारी आवश्यक " विषय पर जनता को प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि ट्रेफिक नियम के पालन से खुद का सुरक्षा तो होता ही है . साथ ही दूसरों की भी सुरक्षा सुनिस्चित होती है । किसी भी रोड दुर्घडना का कारण किसी न किसी पक्ष की ट्रेफिक नियम में लापरवाही होती है । ट्रेफिक चेकिंग का एक मात्र वजह होता है . ट्रेफिक नियम के प्रति लोगों को सचेत करा कर सुरक्षा का वातावरण तैयार करना । ट्रेफिक नियम के अनुरूप आदत में परिवर्तन कराना ट्रेफिक अथॉरिटी का काम होता है । यह भी सही है . कि आदत में परिवर्तन दो तरह से होता है . एक तो स्वतः से या फिर बल पूर्वक ।यह व्यवहारिक प्रकिया है । उन्होंने सभी को ट्रेफिक कार्ड बनाने की सलाह दिये और आवश्यकतानुसार सहयोग देने का आश्वासन दिये । लोगों के शंकाओं का भी समाधान किये । श्री देशलहरा जी का पुष्प गुच्छ से स्वागत श्री सांवत राम बंजारे एवं श्री बी पी राउतराय द्धारा किया गया । गुरू प्रसाद श्री एल बंजारे जी के परिवार से था ।

(टिप्स क 11):- 221 वें गुरू वंदना (दिनांक 28 04 2008)

221 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 28 अप्रेल 2008. को श्री गोरे लाल बर्मन सतनाम मिशन को प्रचारित करने में कला एक शसक्त माध्यम है विषय पर अपना टिप्स प्रदान किये ।

(टिप्स क 12):- 222 वें गुरू वंदना (दिनांक 05 05 2008)

222 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 05 मई 2008. को श्री एच सी चंदनिहा सहायक प्रबंधक . टी पी आई (इलेक्ट्रीकल्स) . भिलाई इस्पात संयंत्र बिजली का सुरक्षित उपयोग ही बिजली संबंधी दुर्घटना को टाल सकता है विषय पर अपना टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि बिजली हमारी जिंदगी की अभिन्न अंग है . जो हर प्रकार की सुविधाएं प्रदान करता है । लेकिन बिजली का असुरक्षित उपयोग हमारी जिन्दगी के लिये सबसे ज्यादा खतरनाक साबित हो सकती है । अतः बिजली की सुरक्षित उपयोग से ही हम सुरक्षित रह सकते हैं । बिजली की सुरक्षित उपयोग की जानकारियां बच्चे से बुजुर्ग तक प्रत्येक को होना आवश्यक है । दुर्घटना का प्रमुख कारण ओव्हर कान्फिडेन्स (अति आत्म विश्वास)का होना ही होता है । अतएव हम ओव्हर कान्फिडेन्स से बचें एवं प्रत्येक को बिजली की सुरक्षित उपयोग की जानकारियां देने की ब्यवस्था करें ।अर्थिंग का न होना व लूस कनेक्सन दुर्घटना के प्रमुख कारणों में से है । बरसात में बिजली कडकते वक्त पेड का सहारा न लें . हाई टेंसन लाइन के नीचे मोबाइल का स्तेमाल न करें । हीटर. पंखा . कुलर . फीज . मिक्सी . कम्प्यूटर आदि के सुरक्षित उपयोग के संबंध में उदाहरण देकर समझाये एवं महिलाओं को विशेष रूप से

सचेत किये । विभिन्न प्रश्नों का संतोषप्रद उत्तर भी दिये । इस अवसर पर ग्राम खोपली से दो जोडों का आदर्स सतनाम विवाह गुरू घासीदास सेवा समिति के सौजन्य से संपन्न हुआ ।

(टिप्स क 13):- 223 वें गुरू वंदना (दिनांक 12 05 2008)

223 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक **12** मई **2008**. को श्री पवन कुर्रे पुलिस निरीक्षक . रायपुर अपना अनुभव का टिप्स " देश हित में पुलिस प्रशासन एवं जनता के बीच माधुर्य संबंध होना आवश्यक है " विषय पर जनता को प्रदान किये। उन्होनें पुलिस प्रशासन की उपयोगिता के इतिहास की चर्चा करते हुये बताया कि समाज में गलत तत्वों की गतिविधियों पर रोक लगाने के लिये सबसे पहले पुलिस मित्र के गठन से शुरूवात हुआ . जिसका उद्देश्य जनता को अन्याय अत्याचार से राहत दिलाने से ही था ।आज भी इस छबि को जनता के बीच प्रमाणित करने व प्रसारित करने की आवश्यकता है । पुलिस का प्रमुख कार्य संविधान द्वारा जनता को प्रदत्त अधिकार एवं कर्तव्य के बीच संतुलन बनाने का है । इसके लिये पुलिस प्रशासन व जनता के बीच माधुर्य संबंध का होना आवश्यक है ।आपस में संतुलित वाणी व व्यवहार ही उचित कारगार माध्यम है. जिसे हम उपयोग में लायें । श्री कुर्रे जी ने अधिकार एवं कर्तव्य के संबंध में अनेक उदाहरण देकर उपस्थित जनों को समझाये । श्री कुर्रे जी का स्वागत श्री टी दास एवं श्री एस एल देशलहरा द्वारा पुष्प गुच्छ से किया गया । इस अवसर पर गुरू प्रसाद श्री पवन कुर्रे जी एवं श्री गोविन्द बर्मन जी के परिवार की ओर से था ।श्री डार्विन पात्रे बैहाकापा एवं श्री गिरवर प्रसाद बंजारे कोसरंगी ने भी सतनाम भजन प्रस्तुत किये

(टिप्स क 14):- 224 वें गुरू वंदना (दिनांक 19 05 2008)

224 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक **19** मई **2008**. को श्री के डी खरे सहायक प्रबंधक . राजभाषा विभाग भिलाई इस्पात संयंत्र अपना अनुभव का टिप्स " हिन्दी संचार का सशक्त माध्यम . व्यवहार में कारगार कैसे बनावें ? " विषय पर जनता को प्रदान किये।उन्होंने बताया कि किसी भी देश की उन्नति एवं प्रगति के लिये आपसी संपर्क एवं सहयोग का होना आवश्यक है । आपस में संपर्क हेतु एक सरल . सहज एवं सर्व मान्य भाषा का होना नितांत आवश्यक है । इसी बात को ध्यान में रखकर हमारे संमाननीय संविधान निर्माताओं ने अपनी कुशल बुद्धि एवं दूर दर्शिता का परिचय देते हुये हिन्दी को देश की राजभाषा स्थापित करने का प्रावधान संविधान में उल्लेखित किये । जनता की जरूरत एवं चाहत को ध्यान में रखकर पूरे देश को क. ख . ग क्षेत्रों में रखकर कमिक विकाश का प्रावधान रखे । आज हिन्दी भारत वर्ष का ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व की जरूरत व चाहत बन गयी है । आज पूरे विश्व के विभिन्न देश भी भारत से संपर्क हेतु हिन्दी को सशक्त माध्यम समझने लगे हैं । ऐसे मौके पर हमें हमें हिन्दी के कारगार उपयोग के बारे में चिंतन मनन जरूरी है । अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचाने के लिये हिन्दी उपयुक्त माध्यम है ।आज साबित हो चुका है कि ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहॉ हिन्दी का सफल उपयेाग न किया जा सके । हिन्दी को अधिक से अधिक व्यवहार में लाकर इस सशक्त माध्यम को और भी कारगार बनाया जा सकता है । इस अवसर पर एक विशेष बैठक का भी आयोजन हुआ. जिसमें समाज के विभिन्न वक्ताओं ने समाज की आज की

ज्वलंत समास्यों के संबंध में विचार विमर्श किये ।गुरू प्रसाद श्री हरिश्चंद कोसरे . श्री राजू लाल बंजारे एवं श्री रामचरण बांधे जी के परिवार की ओर से था ।

(टिप्स क 15):- 225 वें गुरू वंदना (दिनांक 26 05 2008)

225 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 26 मई 2008. को श्री एच एल घिदोडे वरिष्ठ प्रबंधक व मेंटेनेंस प्रभारी स्टोरेज बिन सिंटरिंग प्लांट 1 . भिलाई इस्पात संयंत्र अपना अनुभव का टिप्स "घरेलू यॉत्रिक उपकरणों का सुरक्षित रख रखाव आवश्यक क्यों और कैसे ? " विषय पर जनता को प्रदान किये।उन्होंने बताया कि एक मरीज अपना दुख तखलिफ डॉक्टर को बताता है लेकिन मशीन से ऐसी उम्मीद नहीं है जो एक इंजिनियर को बता सके । इसलिये मशीन के इलाज के लिये इंजिनियर का काम बडी ही चुनौती पूर्ण होता है । यह चुनौती पूर्ण कार्य को इंजिनियर बडी ही सफलता पूर्वक करते आ रहे हैं । भिलाई इस्पात संयंत्र इसका ज्वलंत उदाहरण है ।घरेलू यॉत्रिक उपकरणों का सुरक्षित रख रखाव के लिये परिवार के प्रत्येक सदस्य में एक यॉत्रिक इंजिनियर का दृष्टि कोण का होना आवश्यक है । और यह सब परिवार में आदत व्यवहार में आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर एक सुसंस्कार बनाकर ही हो सकता है । उन्होनें सुझाव दिया कि घर में उपयोग होने वाली समस्त यॉत्रिक उपकरणों का सूचि बद्ध कर नियमित साफ सफाई के साथ आवश्यकतानुसार आयलिंग ग्रीसिंग बहुत ही आवश्यक है । कोशिष की जानी चाहिये कि यॉत्रिक उपकरण आई एस आई मार्क के ही हों . ताकि दुर्घटनाओं को कम किया जा सके । उन्होंने घर में उपयोग होने वाले विभिन्न यॉत्रिक उपकरणों जैसे फ्रीज . मिक्सी . सिलाई मशीन . कूलर . सइकिल . दो पहिया व चार पहिया वाहनों आदि के संबंध में उदाहरण देकर समझाये । उत्साह जनक प्रश्नों का संतोष प्रद उत्तर दिया गया । श्री घिदोडे जी का स्वागत श्री टी दास जी ने चंदन का टीका लगाकर किया । इस अवसर पर गुरू प्रसाद श्री एच एल घिदोडे व श्री एम एल भतरिया जी के परिवार की ओर से था ।

(टिप्स क 16):- 226 वें गुरू वंदना (दिनांक 02 06 2008)

226 वें गुरू वंदना केअवसर पर दिनांक 2 जून 2008. को श्री मती रीति देशलहरा . पार्ष द भिलाई नगर निगम अपना अनुभव का टिप्स "परिवार में संतुलन प्रदान करने में महिलाओं का योगदान कब और कैसे ? " विषय पर जनता को प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि परिवार में संतुलन बनाने के लिये परिवार के सदस्यों में प्रेम व भाईचारा पर आधारित वैचारिक केन्द्र बिन्दु का होना आवश्यक है ।यह वैचारिक केन्द्र बिंदु परिवार के प्रत्येक सदस्य . बच्चे से बुजुर्ग तक को एक साथ बांध कर. दुख सुख दोनों ही परिस्थिति में एकता प्रदान करता है । इस वैचारिक केन्द्र बिन्दु को स्थापित करने में परिवार में महिलाओं की अहम भूमिका होती है । परिवार के प्रत्येक सदस्यों के जरूरत एवं चाहत को ध्यान में रखकर .उनकी भावनाओं का आदर करते हुये आदत व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन कर के ही वैचारिक केन्द्र बिन्दु को स्थापित किया जा सकता है । इसके लिये परिवार के प्रत्येक सदस्य को जानकार होना आवश्यक है । जानकारी के लिये संद्धांतिक व व्यवहारिक शिक्षा के साथ संपर्क एवं सहयोग की भावना का होना जरूरी है ।हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतएव समाज से उसे हमेशा नाता रखना ही होगा ।उन्होंने विभिन्न

परिस्थितियों में महिलाओं की परिवार के प्रति सार्थक भूमिका के संबंध में भी उदाहरण दे कर समझाया ।श्री मती देशलहरा का स्वागत श्री के दास पूर्व अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायधीस एवं वर्तमान में चेयर मेन उपभोक्ता फोरम दुर्ग ने पुष्प गुच्छ प्रदान कर किया ।इस अवसर पर श्री के दास साहब ने भी परिवार में संपत्ती के बटवारा संबंधित आवश्यक जानकारियां दिये ।गुरू प्रसाद श्रीमती रीति देशलहरा एवं श्री देवी दास टंडन के परिवार की ओर से था ।

(टिप्स क 17):- 227 वें गुरू वंदना (दिनांक 09 06 2008)

227 वें गुरू वंदना केअवसर पर दिनांक 9 जून 2008. को श्री कमल टंडन वरिष्ठ प्रबंधक उर्जा प्रबंधन विभाग भिलाई इस्पात संयंत्र अपना अनुभव का टिप्स " उर्जा के विभिन्न रूप . सदुपयोग से ही मानव कल्याण संभव " विषय पर जनता को प्रदान किये ।उन्होनें बताया कि उर्जा विभिन्न स्वरूपों में उपलब्ध है ।जरूरत है कि उर्जा के खतरनाक / विध्वंस स्वरूप को सुरक्षित स्वरूप में परिवर्तन कर . उसको संग्रह कर आवश्यकतानुसार सदुपयोग करें । इसके लिये तकनीकि ज्ञान का होना आवश्यक है । उन्होनें आगे बताया कि अनादि काल से आदि मानव द्वारा अग्नि की चिंगारी से उर्जा की विकाश यात्रा शुरू होकर आज मानव उर्जा के अनगिनत श्रोत का इस्तेमाल करते आ रहा है । "उर्जा की बचत उर्जा का उत्पादन है " यह सर्वथा प्रमाणित है । यह भी सत्य है कि वर्तमान में लगभग सभी क्षेत्रों में उर्जा का इष्टम (आपटिमम)उपयोग की तकनीक उपलब्ध है । इसी तकनीक का इस्तेमाल कर भिलाई इस्पात संयंत्र ने अपनी उत्कृष्टता कायम रखी है . जो किसी से छिपा नहीं है । उर्जा की इष्टम उपयोग संबंधित जानकारियां सर्व साधारण तक पहुंचना जरूरी है । इस संबंध में विभिन्न समाज सेवी संगठन भी अपनी सहयोग प्रदान कर सकते हैं । इस दिशा में गुरू वंदना परिवार का प्रयास सराहनीय है। उन्होंने उदाहरण देकर आहवाहन किया कि हम अपने आदत व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन करके गैस . पेट्रोल. बिजली उर्जा आदि के खपत में कमी करके आज की अंर्त राष्ट्रीय उर्जा समस्या के निवारण में अपना महत्व पूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं ।इस अवसर पर श्री टंडन जी का स्वागत श्री देव प्रसाद नारंग ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्री के दास चेयर मेन उपभोक्ता फोरम दुर्ग के परिवार की ओर से था ।

(टिप्स क 18):- 228 वें गुरू वंदना (दिनांक 16 06 2008)

228 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 16 जून 2008. को डॉ एम आर कुर्रे वरिष्ठ चिकित्सक शासकीय अस्पताल खुर्सीपार भिलाई अपना अनुभव का टिप्स " मौसमी बीमारियॉ कारण व निवारण " विषय पर जनता को प्रदान किये। उन्होंने बताया कि गर्मी . बरसात व ठंड वर्ष में तीन प्रमुख मौसम हैं . जो खुशियों के साथ गम भी लाता है । मौसम के बदलाव के साथ ही आदत व्यवहार में मौसम के अनुरूप बदलाव लाना आवश्यक है । यह सब अनुभव और व्यवहारिक ज्ञान पर निर्भर करता है । परिवार के अनुभव शील सदस्य का कर्त्तव्य है कि इसकी जानकारी परिवार के प्रत्येक सदस्य को दे । उन्होंने एक बात स्पष्ट रूप से बताया कि मौसम के अनुरूप अपनी आदत व्यवहार में परिवर्तन ही एक मात्र कारगार उपाय है । इससे कम से कम दवाई का प्रयोग कर मौसम का आनंद उठाया जा सकता है । बरसात में पानी के फुहार के आनंद के साथ से ही बरसाती मौसमी बीमारी का

सिलसिला शुरू हो जाता है । भीगने के बाद शरीर में गर्मी का लाना आवश्यक है । गरम दुध के साथ हल्दी पाउडर का प्रयोग सर्वथा उपयुक्त है ।लापरवाही खान पान. रहन सहन के साथ दूषित जल. व कीडे मकोडे से फुड पाइजिनिंग से बीमारी का खतरा होता है । सर्दी जैसी साधारण बीमारी बुखार . उल्टी टट्टी . से लेकर मलेरिया . टाइफाइड का रूप ले लेता है । शरीर के विभिन्न अगों में व्हाइरस व खतरनाक सूक्ष्म जीवाडुओं के प्रवेश से विभिन्न प्रकार के जटील बीमारी पैदा हो जाते हैं । बीमारी के स्तर के अनुसार उसका उपचार आवश्यक है । घरों में उपलब्ध वस्तुओं जेसे हल्दी . जीरा . नमक . शक्कर आदि का उचित उपयोग करके बरसाती मौसमी बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है । उपस्थित जन काफी प्रभावित हुये और सलाह दिये कि टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम का सीडी तैयार कर के अधिक से अधिक लोगें को इसका लाभ प्रदान किया जाय ।।इस अवसर पर डॉ कुर्रे का स्वागत श्री मती कुंती पाटील ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्री कमल टंडन के परिवार की ओर से था ।

(टिप्स क 19):- 229 वें गुरू वंदना (दिनांक 23 06 2008)

229 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक **23** जून **2008**. को श्री मती भानुमती कोसरे दूर दर्शन कलाकार एवं छत्तीस गढ फिल्म आर्टिस्ट अपना अनुभव का टिप्स " जिंदगी के मोड पर कला की सार्थकता " विषय पर जनता को प्रदान किये।"अगर तमन्ना सही है . तो रास्ते निकल ही आते हैं और अगर तमन्ना झूठी है . तो अच्छा से अच्छा बहाना भी मिल जाता है ।" यह सत प्रतिसत एक कलाकार विशेष कर महिला कलाकार के लिये भी लागू होता है । श्री मती भानुमती कोसरे ने बताया कि महिला कलाकार के जिंदगी में कई मोड होते हैं ।मोड की शुरूवात बचपने से ही प्रारंभ हो जाता है ।शादी के पहले मां बाप. उनका परिवार एवं समाज . शादी के बाद पति . उनका परिवार एवं समाज । बाल बच्चे पैदा होने के बाद परिदृश्य में परिवर्तन के साथ ही अन्य किसी और प्रकार की घटना क्रम । ये सभी जिन्दगी के मोड हैं ।विभिन्न परिस्थियां अगर कला के अनुकुल हैं तो महिला कलाकार के लिये आसान हो जाता है और अगर परिस्थियां प्रतिकुल हैं तो उनकी सही तमन्ना ही मंजिल तक पहुंचाने में सहायक हो सकती है । उन्होंने अपनी अनुभव का उदाहरण दे कर स्पष्ट किया कि बचपन से ही कलाकार में कला के गुण परिलक्षित होने लगते हैं ।कला के प्रति लगन व त्याग स्पष्ट नजर आता है । प्रत्येक अवसर पर मिलने वाली सहयोग अथवा असहयोग ही कलाकार के जिंदगी के मोड पर असर करता है । कला के प्रति सच्ची लगन व त्याग ही कलाकार को जिन्दगी के अंजान मोड पर सही मार्ग व दिशा प्रदर्शित करता है । श्री मती कोसरे ने अपनी जिंदगी के प्रेरणा दायक अनुभव का जिकर के साथ अपनी प्रिय गीत व रचनाओं का भी श्रोताओं को रसा स्वादन करवायीं व कला के क्षेत्र में अपनी भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिये ।इस अवसर पर श्री मती भानुमती कोसरे का स्वागत श्री मती रेशम बाई माता श्री रोहित कुर्रे डी एस पी ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्री थानू दास बघेल . श्री रोहित कुर्रे डी एस पी व श्री देवी दास टंडन के परिवार की ओर से था । इस अवसर श्री सांवत राम बंजारे ने अपने नव नाती के आगमन पर उपस्थित जनों को मिठाई बांट कर अपनी खुशी का इजहार किये ।

(टिप्स क 20):- 230 वें गुरू वंदना (दिनांक 30 06 2008)

230 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 30 जून 2008. को श्री एस के केशकर सहायक महाप्रबंधक इनस्ट्रूमेनटेशन विभाग भिलाई इस्पात संयंत्र अपना अनुभव का टिप्स "वर्तमान परिवेश में इनस्ट्रूमेनटेशन की आवश्यकता कब और कैसे ? " विषय पर जनता को प्रदान किये।उन्होंने बताया कि मानव के जिंदगी के प्रत्येक क्षेत्र में गुणवत्ता प्रबंधन का होना आवश्यक है । मानव का कमिक विकाश भी इसी गुणवत्ता प्रबंधन से होकर आज वर्तमान स्वरूप तक पहुँचा है । गुणवत्ता प्रबंधन के लिये गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले तत्वों का . अनुसंधान व व्यवहारिक ज्ञान से प्रमाणित सही अनुपात में होना आवश्यक है । उन्होंने उदाहरण देकर समझाया कि स्वादिष्ट सब्जी बनाने के लिये आग में कडाही रखने से लेकर कडाही को आग से उतारते तक विभिन्न वस्तुओं को कब कितना डालना और पकाना . यह सब एक कुशल और अनुभवी गृहणी पर ही निर्भर करता है ।विभिन्न वस्तुओं के अनुपात के नाप के लिये उपयुक्त व सही उपकरण के साथ सही उपयोग का होना आवश्यक है । यहीं पर इनस्ट्रूमेनटेशन की भूमिका होती है । आज ऐसे ऐसे उपकरण भी उपलब्ध हैं जो अनुपात बताने के साथ ही सही चाही गयी अनुपात को भी संतुलित कर लेता है । यह सब आधुनिक तकनीक व कम्प्युटर के ही कमाल है । वर्तमान गुणवत्ता प्रबंधन स्पर्धा के परिवेश में जिसने इस तकनीक को जाना व समझा उसी की पूंछ परख व स्पर्धा की दौड में पहली पंक्ति में स्थान होगा । आज भिलाई इस्पात संयंत्र ने यह सब कर दिखाया है । इसके लिये हम अपनी ताकत को समझें . अपनी कमजोरियों को दूर करें . अवसर का भर पूर उपयोग करें व चुनौती को अवसर में परिवर्तन करने की तकनीक सीखें ।यह सब गुणवत्ता को प्रभावित करने वाली तत्वों को बारीकी से समझने अर्थात नापने तौलने की क्षमता पर निर्भर करता है । इनस्ट्रूमेनटेशन तकनीक काउपयोग जिन्दगी के हर क्षेत्र में है . जिसे हमें आज समझने की जरूरत है ।इस अवसर पर श्री केशकर जी का स्वागत श्री सांवत राम बंजारे ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्रीमती भानुमती कोसरे के परिवार की ओर से था ।श्री ब्रम्हा नंद देशलहरा ने अपनी नयी वाहन खरीदने की खुशी में मिठाई बांट कर उपस्थित जनों का आर्शिवाद प्राप्त किया ।

(टिप्स क 21):- 231 वें गुरू वंदना (दिनांक 07 07 2008)

231 वें गुरू वंदना के अवसर परदिनांक 7 जुलाई 2008. को श्री नरेश टंडन . सहायक प्राध्यापक शासकीय महाविद्यालय अहिवारा . नंदिनी अपना अनुभव का टिप्स "कैरियर के लिये उपयुक्त शिक्षा का चुनाव जरूरी क्यों और कैसे ? " विषय पर जनता को प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि किसी भी देश के केरियर अर्थात प्रगति के लिये उस देश के समस्त नागरिकों का भागीदारी आवश्यक है । भागीदारी के लिये जानकारी और जानकारी के लिये शिक्षा का होना जरूरी है ।इतिहास गवाह है कि सोने की चिडिया कहलाने वाली भारत की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है ।इस दुर्दशा के पीछे शिक्षा के अभाव का बहुत बडा हाथ है ।बडी दुख की बात है कि भारत में सर्व शिक्षा की शुरूवात सन 1825 में ही हो पाया । यह तो भारतीय संविधान के निर्माता डॉ बी आर आम्बेडर जी के अनुभव व दूरदर्शिता की ही देन है कि शिक्षा को भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार में रखा गया और सर्व साधारण देश के नागरिकों में शिक्षा का प्रचार प्रसार तेजी से हुआ । जिससे आज

भारत की पहिचान दुनियॉं में बन पाई है ।केरियर व शिक्षा का चोली दामन का रिस्ता है । बचपने से ही केरियर बनने व बनाने की प्रकिया शुरू हो जाती है। इतना जरूर है कि शिक्षा के विभिन्न मोड पर जहां से शिक्षा की दिशा व विषय बदलती है वहॉं पर बच्चे के रूचि को ध्यान में रख कर पुर्नविचार करना भी आवश्यक है ।यह सब मॉं बाप अथवा अभिभावकों के अनुभव . जानकरियां व शिक्षा के स्तर पर निर्भर करता है । भिलाई इस्पात संयंत्र इसका ज्वलंत उदाहरण है । कौन सा प्रोडक्ट . किस ग्रेड का निर्माण करना है . उसकी तैयारी कच्चा माल को धमन भटठी में डालने से शुरू कर अंतिम चरण तक ध्यान में रखना होता है । वर्तमान में प्रचलित विभिन्न प्रतियोगी परिक्षाओं का ज्ञान का होना आवश्यक है । सर्व साधारण को साधन के अभाव के वजह से इन सबकी जानकारियां नहीं हो पाती । इसके लिये सामाजिक संगठनाओं व सामाज के शुभ चिंतकों का दायित्व हो जाता है कि वे सभी संबंधित जानकारियॉं सर्व साधारण तक पहुँचाने में मदद करें ।इस दिशा में गुरू वंदना परिवार का प्रयास सराहनींय है । उन्होंने विभिन्न कैरियरों मेडिकल . इंजिनियरींग . कामर्स आदि के अलावा नेट **(NATIONAL ELIGIBILITY TEST)** परीक्षा के संबंध में विस्तृत जानकारी दिये और इस दिशा में हर संभव सहयोग देने का आश्वासन भी दिये ।इस अवसर पर श्री टंडन जी का स्वागत श्री मती वेदम्बाई गायकवाड ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्री दुमान दास पुरे जी के परिवार की ओर से था ।श्री हरिशंकर घृतलहरे ने अपनी नयी वाहन खरीदने की खुशी में मिठाई बांट कर उपस्थित जनों का आर्शिवाद प्राप्त किया ।अंत में सतनामी समाज के प्रथम पी एच डी प्राप्त डॉ बी एस जोशी को उनकीं निधन पर मौन श्रद्धांजली दिया गया ।

(टिप्स क 22):- 232 वें गुरू वंदना (दिनांक 14 07 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यकम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 232 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 14 जुलाई 2008. को श्री श्याम सत्यवंशी जी. सहायक यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग दुर्ग अपना अनुभव का टिप्स "जल का प्रबंधन कल आज व कल " विषय पर जनता को प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि " जल ही जीवन है " यह सत प्रतिसत सही है ।मानव . पशु पक्षी . जीव जन्तु आदि सजीव से समस्त निर्जीव पदार्थ तक . अकाश से पताल तक जल किसी न किसी रूप ठोस . तरल या गैस में विद्यमान है ।अत ःजल सर्व ब्यापी है पर इसका संतुलन आवश्यक है अथवा इसका रूप जीवन रक्षक से जीवन भक्षक बनने मेंज्यादा समय नहीं लगता । भौतिक अथवा रासायनिक दोनों ही दृष्टि से जल बडा ही महत्वपूर्ण है । आवश्यकता अविष्कार की जननी है और इसी लिये अनादि काल से ही मानव के विकाश के साथ ही जल प्रबंधन की प्रकिया शुरू होकर वर्तमान स्वरूप में परिलक्षित हो पाया है ।मौसम व प्रकृति को ध्यान में रखकर जल की उपलब्धता के हिसाब से जीवन व जिंदगी से जुडे समस्त आयामों में जल की इष्टमय उपयोग की प्रक्रिया समस्त क्षेत्रों में जारी है । तथापि इस दिशा में आज भी संपूर्ण विश्व में एक चुनौती बनी हुयी है । समय रहते जल की आम नहीं बल्कि खास जानकारियां संबंधित जानकारों द्वारा सर्व साधारण तक प्रतिपादित करने से ही चुनौती को अवसर में बदल कर मानव कल्याण संभव है । उन्होंने जल का सफर नदी नाले से लेकर घर के मटके से जल निकालने तक की सुरक्षित उपयोग की विधि के बारे में विस्तार से समझाये । लोक स्वास्थ्य यॉंत्रिकी विभाग दुर्ग का प्रयास ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि शिवनाथ नदी . दुर्ग व भिलाई निवासियों के लिये हर मौसम गर्मी . बरसात हो या ठंड सबमें बरदान ही सिद्ध होगा ।इस अवसर पर श्री सत्यवंशी जी

का स्वागत श्री टी दास व श्री मती राजकुमारी दास ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्री नरेश टंडन जी के परिवार की ओर से था ।

(टिप्स क 23):- 233 वें गुरू वंदना (दिनांक 21 07 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 233 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 21जुलाई 2008. को श्री बी आर बंजारे पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ सहकारी साख समिति सेक्टर 1 भिलाई अपना अनुभव का टिप्स "वर्तमान परिपेक्ष में सहकारिता की सार्थकता "विषय पर जनता को प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि सहकारिता अर्थात साथ साथ मिलकर कार्यो को संपादित करना । इसके लिये साझा लक्ष्य का होना आवश्यक है । जो समान विचार धारा से ही संभव है ।समान विचार धारा आज की चुनौती है । इस चुनौती को एक दूसरे के आत्म सम्मान का आदर करते हुये प्रेम व भाईचारा के माध्यम से सहकारिता कल्याण कारी अवसर में परिवर्तित किया जाना संभव है ।सहकारिता को गति प्रदान करने में गुणात्मक नेतृत्व का होना आवश्यक है । उन्होंने इस संदर्भ में तीन समान मूर्ति पर कीमत अलग अलग को उदाहरण देकर समझाया कि आज के परिवेश में तीन तरह के लोग पाये जाते हैं ।पहला जो एक कांन से सुन कर दूसरे कांन से निकाल देता है ।दूसरा जो कांन से सुन कर जबान से निकाल देताा है । तीसरे तरह के लोग जो कांन से सुन कर दिल में बैठा कर ,जिंद कर दुनियां को बदले की क्षमता रखता हो . ऐसे ही नेतृत्व की जरूरत है सहकारिता में।आज थोडे से अमीर व बहुत से मेहनत कस गरीबों के बीच खाई और भी बढती नजर आ रही है ।ऐसे माहौल में सहकारिता ही एक विकल्प नजर आता है जिससे शोषण से मुक्ति मिल सकती है ।सर्व साधारण जनता एक साथ साझा उद्देश्य के लिये मिलकर अपनी जरूरत को पूरा कर सकते हैं और आपस में प्रेम भाईचारा के साथ खुशहाली की जिंदगी गुजर बसर कर सकते हैं । अमीरों का भी कर्तव्य होता है कि वे गरीबों से प्रेम व्यवहार अपना कर सहकारिता को प्रोत्साहन करें । श्री बंजारे जी ने प्रसन्ता व्यक्त किया कि भिलाई आज सहकारिता से ओत प्रोत है ।वर्तमान में विभिन्न सहकारी समितियां कार्यरत हैं ।समितियों के सदस्यों का तो भला हो ही रहा है . साथ ही अन्य जरूरत मंदों को भी समयानुसार सहयोग संभव हो पा रहा है । उन्होंने सहकारी अधिनियम के संबंध में विस्तृत में जानकारी देते हुये छत्तीसगढ सहकारी साख समिति सेक्टर 1 के अपने कार्यकाल में किये गये विभिन्न कल्याण कारी कार्यो का भी जिकर किये .जिससे लोग काफी प्रभावित हुये ।इस अवसर पर श्री बी आर बंजारे जी का स्वागत श्री जे आर सोनवानी ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्री डी आर पुरेना जी. श्री श्याम सत्वंशी जी एवं श्री देव प्रसाद नारंग जी के परिवार की ओर से था ।

(टिप्स क 24):- 234 वें गुरू वंदना (दिनांक 28 07 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 234 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 28जुलाई 2008. को श्री आर सी देशलहरा . ब्याख्याता शासकीय उच्चतर माध्यामिक शाला डुंडेरा अपना अनुभव का टिप्स "शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्ता "विषय पर जनता को प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि जिस तरह भोजन की आवश्यकता शरीर के लिये होता है । उसी तरह शिक्षा अथवा ज्ञान की आवश्यकता दिमाक के लिये है ।शिक्षा अथवा ज्ञान विहीन व्यक्ति पशु तुल्य होता है ।शिक्षा से ही व्यक्तित्व व चरित्र का निर्माण होता है ।सैद्धांतिक ज्ञान के अलावा व्यवहारिक ज्ञान का भी होना जरूरी है । अथवा हम अपने लक्ष्य में असफल भी हो सकते हैं । उन्होंने उदाहरण देकर समझाया कि एक कक्षा में शिक्षक ने विद्यार्थियों से प्रश्न पूछा "एक बाडे में 20 भेंड हैं और उसमें से एक भेंड बाउण्ड्री कूद कर भाग जाय तो कितने भेंड बाडे में रह जायेंगे ? "अधिकांश होशियार बच्चों ने तुरंत 19 का जवाब दिये ।एक बच्चा जो कभी कक्षा में जवाब नहीं देता था .उसने बडी ही बिश्वास के साथ खडा होकर बोला

कि बाडे मे एक भी भेंड नहीं बचेगा । उसने बताया कि वह गडरिया बच्चा है और भेड चराता है तथा भेड के स्वभाव अथवा व्यवहार को अच्छे से जानता है । एक भेंड के भागने से सभी भेंड भाग जायेंगे । यही व्यवहारिक ज्ञान है इसे नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिये ।मानव समाज की उन्नति के लिये समता .स्वत्रंता. बंधुत्व व न्याय पर आधारित शिक्षा का होना आवश्यक है अथवा शिक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाता । प्रेम की भाषा तो इंसान क्या पशु पक्षी तक समझते हैं ।प्रेम की शिक्षा से सर्व विश्व कल्याण संभव है । आवश्यकता है कि हम इसे व्यवहार में लावें व दूसरों को भी प्रेरित करें ।इस अवसर पर श्री आर सी देशलहरा जी का स्वागत श्री त्रिलोचन डहरे ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्री टी दास . प्रबंधक विधि विभाग बी एस पी के परिवार की ओर से था ।गुरू वंदना के अवसर पर गुरू घासीदास सेवा समिति के सौजन्य से वर श्री विक्रम मारकण्डे पिता श्री शेर सिंह मारकण्डे कातुल बोर्ड निवासी व वधु सौ का मनीशा पिता श्री जगमोहन बंजारे. माता श्री मती देवकी बंजारे कातुल बोर्ड निवासी का आदर्स सतनाम विवाह भी संपन्न हुआ ।

(टिप्स क 25):- 235 वें गुरू वंदना (दिनांक 04 08 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यकम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 235 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 04 अगस्त 2008. को श्री मान सिंह बंजारे . सहायक प्रबंधक बी एण्ड एस आई .सर्वे विभाग भिलाई इस्पात संयंत्र अपना अनुभव का टिप्स " सर्वेक्षण काउपयोग कब और कैसे ? " विषय पर जनता को प्रदान किये।उन्होंने बताया कि सर्वेक्षण एक ब्यापक प्रकिया है . जिसका संबंध जिन्दगी के प्रत्येक पहलू से ताल्लुकात है । यह प्रकिया जीवन से मरण तक चलते रहता है । मनुष्य अपने इन्द्रियों का इस्तेमाल करके विभिन्न उपलब्ध माध्यमों /उपकरणों के सहयोग से सर्वेक्षण की प्रकिया निरंतर जारी रखता है ।सर्वेक्षण से उपलब्ध / प्राप्त आकडों के ही आधार पर विवेक का इस्तेमाल करके जिन्दगी के विभिन्न पहलुओं में लक्ष्यों का निर्धारण कर . उस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है । इस तरह किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में भरोसेमद सर्वेक्षण का अहम भूमिका होता है । प्रत्येक को सर्वेक्षण के उपयोगिता को जानना आवश्यक है । सर्वेक्षण के आंकडे को कब . कितना और कैसे उपयोग में लाना है यह सब व्यक्ति के संद्धांतिक के साथ व्यवहारिक ज्ञान पर निर्भर करता है ।सत चेतना जागृत कर . प्रेम व भाईचारा को प्रोत्साहित करने से ही विश्व बंधुत्व कायम किया जा सकता है जो मानवता के हित में होगा ।उन्होंने बताया कि सर्वेक्षण की आवश्यकता एवं उपयोगिता कल .आज व कल हर पल होता है ।भिलाई इस्पात संयंत्र इसका उदाहरण है . जो आज उत्कृष्ठता के शिखर पर है . जिसमें सर्वे विभाग का महत्व पूर्ण भूमिका है । कुछ वर्षो पहले दुर्घटना ग्रस्त हेलि काप्टर को तलास करने के सहयोग में सर्वे विभाग का पहिचान किसी से छिपा नहीं है ।उन्होंने सर्वे में प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों एवं उनके उपयोग के संबंध में भी आवश्यक जानकारियां प्रदान किये ।इस अवसर पर श्री मानसिंह बंजारे जी का स्वागत डॉ एस आर बंजारे ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्री एच एल घिदोडे के परिवार की ओर से उनकी सुपुत्री कु ममता घिदोडे के मेडिकल कालेज में प्रवेश की खुशी में था । श्री एफ आर जनार्दन .सहायक महाप्रबंधक .भिलाई इस्पात संयंत्र के 53 वां जन्म दिवस पर गुरू वंदना परिवार ने श्री मंशा राम कुर्रे जी के अगुवाई में पुष्प गुच्छ से स्वागत कर. बधाइयॉ देकर खीर व मिठाई का वितरण किये ।अंत में स्व श्री एम आर जेाल्हे सतनामी समाज के प्रथम जज के निधन पर उन्हें मौन श्रद्धांजली दिया गया ।

(टिप्स क 26):- 236 वें गुरू वंदना (दिनांक 11 08 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यकम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 236 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 11 अगस्त 2008. को स्वर्गीया मिनीमाता के 36वीं स्मृति दिवस अवसर पर "वर्तमान भारतीय सामाजिक

परिवेश में महिला नेतृत्व की सार्थकता " विषय पर विभिन्न वक्ता गण अपने अपने अनुभव का टिप्स प्रदान किये ।वक्ताओं ने बताया कि यह कटु सत्य है कि हमारा देश भारत वर्ष शुरू से ही पुरूष प्रधान देश रहा है .जो आज भी जारी है । मानवतावादी अनेक महा पुरूषों ने नारी सम्मान के साथ नारी शिक्षा पर जोर दिये । सन 1825 में सर्व शिक्षा प्रारंभ होने से नारी वर्ग में शिक्षा का प्रचार प्रसार शूरू हुआ ।भारतीय संविधान के जनक डॉ बी आर आंबेडकर की दूर दर्शिता का ही परिणाम है कि भारतीय संविधान में मूल भूत अधिकार का प्रावधान रखा गया .जिसमें समता .स्वतंत्रता .बंधुत्व व न्याय के साथ ही शिक्षा को सभी वर्गो के लिये अवसर प्रदान कर देश की प्रगति में सबकी भागीदारी सुनिश्चित किया गया ।आज महिलायें अपन अधिकार के प्रति काफी सजग नजर आने लगी हैं और जिंदगी के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना चाहती हैं जिससे नेतृत्व की झलक मिलती है । मनुष्य के व्यक्तित्व का पहिचान परिवार से शुरू होकर समाज व राष्ट्र के बाद पूरे विश्व में होता है । व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार के संस्कार का बहुत बडा योगदान होता है । व्यक्तित्व से ही आकर्षण अथवा विकर्षण पैदा होता है । नेतृत्व के लिये व्यक्ति में आकर्षण मतलब दूसरों को अपने तरफ खींचने का गुण का होना आवश्यक है । जो अच्छी आदत व्यवहार से ही संभव है । भारतीय पुरूषों व महिलाओं में निहित अच्छे आदत व्यवहार का बारीकी से परखा जाय तो इसमें महिलायें ही आगे रहेंगीं । ऐसी परिस्थिति में अगर महिला वर्ग नेतृत्व के लिये सामने आयें तो वे पुरूषों की अपेक्षा ज्यादा सफल हो सकती हैं ।इसका जीता जागता उदाहरण स्वर्गीया मिनीमाता जी है .जिससे कोई भी इंकार नहीं कर सकता ।आज इस आदर्स को समाज के साथ देश को बताना आवश्यक है ।इस अवसर पर अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे जिसमें महिला वर्ग से विशेष कर सर्व श्री मती रीति देशलहरा .श्री मती पी बघेल . श्री मती सेजा मारकंडे . श्री मती नैना गायकवाड .श्री मती झमीता साहू आदि । श्री मती उषा बारले की सतनाम भजन प्रस्तुति ने सबका मन मोह लिया । श्री बंशी लाल जोशी द्वारा लिखित काव्य संकलन का विमोचन हुआ । समाज के अनेक सम्मानित जो विभिन्न क्षेत्रों कला .खेल कूद. विशेष शिक्षा . कला आदि में विशेष योगदान रहा है उन सबका सम्मान के साथ ही बोर्ड परीक्षाओं कक्षा 5वीं. 8वीं .10वीं व 12वीं में प्रधम श्रेणी में उतीर्ण होने वाले विद्यार्थियो का प्रतीक चिन्ह देकर समाज के सम्माननीय जनों द्वारा गुरू घासी दास सेवा समिति के सौजन्य से सम्मानित किया गया ।श्री बदरूदिन कुरेशी . श्री मती झमिता साहू .श्री लखन लाल साहू . श्री डी एल रात्रे .श्री दादू लाल जोशी . श्री एस आर दोहरे . श्री टी आर कोसरिया. श्री टी दास . डॉ एल एल मारकण्डे . डॉ एस आर बंजारे . श्री जैज लाल राय .श्री एफ आर जनार्दन . श्री राजेश बंजारे .श्री डी एस नवरंगे. श्री मनोज कुर्रे श्री एम एल भतरिया .श्री शोभा राम बघेल आदि इस मौके पर विसेष रूप से उपस्थित थे ।गुरू प्रसाद गुरू घासीदास सेवा समिति के सौजन्य से था ।

(टिप्स क 27):- 237 वें गुरू वंदना (दिनांक 18 08 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 237 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 18 अगस्त 2008. को श्री आर आर टांडिया सहायक महाप्रबंधक आक्सीजन प्लांट 2 भिलाई इस्पात संयंत्र अपना अनुभव का टिप्स " आक्सीजन का सुरक्षित उपयोग क्यों और कैसे ? " विषय पर जनता को प्रदान किये । उन्होंने बताया कि रोटी . कपडा और मकान मानव मात्र की जरूरत है .लेकिन आक्सीजन तो विश्व में मानव के साथ समस्त जीव जन्तु . पशु पक्षी के लिये प्रत्येक पल आवश्यक है ।इस महत्वपूर्ण तत्व की तरफ वैज्ञानिकों का ध्यान पहली बार 17वीं सदी में आकर्षित हुआ । तबसे निरंतर आक्सीजन के संबंध में . उसके उपयोग के साथ सुरक्षित रख रखाव के संबंध में लगातार शोध जारी है ।पानी का 88. 8 प्रतिसत वजन .वायु मंडल में 20. 9 प्रतिसत आयतन आक्सीजन का होता है । यही प्रकृति में संतुलन प्रदान करता है ।हम सबका कर्तव्य होता है कि स्वस्थ वातावरण का निर्माण कर पर्यावरण को दुषित होने से बचावें जिससे ग्लोबल वार्मिंग का खतरा टालने में मदद मिल सके । आक्सीजन के उपयोगिता को ध्यान में रखकर अनेक आक्सीजन प्लांट का स्थापना हुआ है .जहॉ विभिन्न विधियों से आक्सीजन का उत्पादन किया

जाता है । उत्पादन किये गये आक्सीजन का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में होता है ।सबसे ज्यादा लगभग 55 प्रतिसत स्टील बनाने में . 25 प्रतिसत केमिकल इंडस्ट्री में व 20 प्रतिसत मेडिकल से संबंधित कार्यो में होता है ।आक्सीजन रंगहीन . गंधहीन . स्वादहीन जरूर है परन्तु जीवन के लिये प्रत्येक क्षण अत्यंत जरूरी है ।जीवित प्राणी के लिये प्रोटिन . कारबोहाइड्रेट .चर्बी के अलावा एनीमल शेल . दांत व हड्डी में आक्सीजन की विशेष भूमिका है ।आक्सीजन के रख रखाव व सुरक्षित उपयोग पर विशेष सावधानी की जरूरत है अन्यथा अत्यंत खतरनाक साबित हो सकता है ।आग से बचाना तो बहुत ही जरूरी है।उन्होने भिलाई इस्पात संयंत्र में आक्सीजन के उत्पादन एवं विभिन्न इकाइयों में उपयोगिता के संबंध में भी जानकारियां प्रदान किये ।इस अवसर पर श्री आर आर टांडिया जी का स्वागत श्री मती प्रमिला डाहरे ने चंदन का टीका लगाकर किया ।गुरू प्रसाद श्री यशवंत लहरे. प्रभारी गुरू वंदना केन्द्र दादर के परिवार की ओर से था।

(टिप्स क 28):- 238 वें गुरू वंदना (दिनांक 25 08 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 238 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 25 अगस्त 2008. को श्री जी पी कुर्रे वरिष्ठ प्रबंधक पावर प्लांट 1 भिलाई इस्पात संयंत्र " बिजली जिंदगी के अभिन्न अंग – सदुपयोग कैसे करें ? " विषय पर अिपने अनुभव का टिप्स प्रदान किये ।उन्होनें बताया कि "इलेक्ट्रीसिटी इज गुड सरव्हेन्ट बट बेड मास्टर " (अर्थात बिजली एक अच्छा नौकर लेकिन खराब मालिक है)।बिजली के सुरक्षित उपयोग के लिये हम इसे हमेशा याद रखें ।हमारी जीवन पद्धति ऐसी बन गयी है . कि बिजली का पल भर के लिये बिछुडना अथवा नहीं होना बर्दास्त के बाहर हो जाता है चाहें हम कहीं भी रहें । महत्व पूर्ण कार्यो अथवा जगहों में बिजली का निरंतर सप्लाई अति आवश्यक है इसीलिये संबंधित निकायों द्वारा इसे सुनिश्चित किया जाता है ।आज हमारे देश भारत में प्रत्येक वर्ष एक हजार के पीछे दस व्यक्ति बिजली संबंधी दुर्घटना के शिकार बनते हैं ।आज हमारे सामने चुनौति है कि बिजली दुर्घटना के आंकडे को शून्य अथवा कम कैसे किया जाय ।ऐसे मौके पर शासन प्रशासन के साथ समाज सेवी संगठनें व बिजली के जानकारों का कर्तब्य हो जाता है कि आम जनता में बिजली के सुरक्षित उपयोग संबंधी जागरूकता लाने में सहयोग प्रदान करें ।जानकारियां प्राप्त कर एवं आदत व्यवहार में आवश्यक बदलाव लाकर ही हम बिजली का सुरक्षित एवं आप्टिमम उपयोग कर सकते हैं ।बचपन से ही परिवार में इसकी शिक्षा देना अति आवश्यक है । आदत व्यवहार को परिवार का संस्कार में बदल कर . मानव समाज का संस्कार बनाया जाना संभव है । यही बिजली दुर्घटना से निजात पाने का स्थाई हल हो सकता है ।उन्होनें बडी ही विस्तार से बिजली और उसके सुरक्षित उपयोग संबंधी व्यवहारिक जानकारियां प्रदान किये । जिसमें बिजली के शाक के कारण व निवारण . आई एस आई मार्क बिजली उपकरणों के साथ जोडने में प्रयोग होने वाले बिजली समान का भी उपयोग करें । बिजली में काम करने के पहले स्वीच को आफ कर लें . बच्चों का विशेष सावधानियां रखें .घरों में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों जैसे रेफिरीजरेटर . मिक्सी . वासिंग मशीन . प्रेस. ऐसी . हीटर आदि में अर्थिंग युक्त तीन पिन का ही उपयोग करें ।बल्ब को बदलते समय. पंखा को खिसकाते समय स्वीच आफ रखें . होल्डर को कभी खुला न रखें ।उन्होने भिलाई इस्पात संयंत्र में बिजली के उत्पादन एवं विभिन्न इकाइयों में उपयोगिता के संबंध में भी जानकारियां प्रदान किये । उपस्थित जनों ने सवाल जवाब कर अपने संकाओं का भी समाधान किये । इस अवसर पर श्री जी पी कुर्रे जी का स्वागत श्री देव प्रसाद नारंग ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री सुकदेव सोनवानी जी के परिवार की ओर से था ।

(टिप्स क 29):- 239 वें गुरू वंदना (दिनांक 1 09 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 239 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनांक 1 सितम्बर 2008. को श्री विरेन्द्र कुमार कुर्रे युवा सामाजिक कार्यकर्ता ने "समाज को नेतृत्व प्रदान करने में युवाओं के ऊर्जा का – सदुपयोग कैसे करें ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान किये ।उन्होनें बताया कि वर्तमान परिवेश में युवा शक्ति को किसी भी हालत में नकारा जाना असंभव है । अगर हम बारीकी से विश्लेषण करे तो पता चलेगा कि युवा शक्ति का उपयोग नकारात्मक व सकारात्मक दोनों तरह से हो रहा है ।अगर हमें समाज के साथ देश का विकाश करना है तो युवाओं में निहित ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग कर बडी आसानी से किया जा सकता है । युवाओं के जोश का उपयोग होश के साथ होना आवश्यक है । इसके लिये समाज के जानकार व अनुभवी सम्माननीय जनों का मार्ग दर्शन जरूरी हो जाता है । गुणात्मक नेतृत्व होने से ही परिणाम की आशा की जा सकती है । इसके लिये कथनी व करनी में एकरूपता आवश्यक है ।उन्होनें आगाह किया कि अगर आप सामने आकर नेतृत्व करेंगे तो विभिन्न प्रकार के चुनौतियों का सामना करना होगा . जिसे घबराना नहीं चाहिये बल्कि चुनौति को अवसर में बदलने की तकनीक आनी चाहिये और यह जानकार व अनुभवी जनों के मार्ग दर्शन से संभव है। अपने जीवन के अनुभव से भी उन्होंने उपस्थित जनों को अवगत कराया ।उपस्थित जनों ने सवाल जवाब कर अपने संकाओं का भी समाधान किये । इस अवसर पर श्री विरेन्द्र कुमार कुर्रे जी का स्वागत श्री शोभा राम बघेल ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री श्याम कुमार मनहर जी के परिवार की ओर से था।

(टिप्स क 30):- 240 वें गुरू वंदना (दिनांक 08 09 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 240 वें गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक 8 सितम्बर 2008. को श्री आर एल ढीढी उप प्रबंधक आई.ई.डी. विभाग भिलाई इस्पात संयंत्र " इंडस्ट्रीयल इंजिनियरिंग तकनीक जिंदगी का अभिन्न अंग –सदुपयोग कैसे करें ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि वर्तमान परिवेश में भिलाई इस्पात संयंत्र इस्पात जगत में एक अपनी पहिचान बना रखी है ।इसमें आई ई डी विभाग का भी महत्वपूर्ण योगदान है । संयंत्र में संपादित मानव व्यवहार और उससे उत्पादन के लागत में प्रभाव को अध्ययन किया जाता है । बजट का आवश्यकतानुसार उपयोग . समय का प्रबंधन . प्रोत्साहन के लिये इंसेन्टीव उत्पादन अनुसार निर्धारण . कार्य संपादन के तौर तरीके पर ध्यान रखकर उचित सलाह प्रदान करना विभाग का प्रमुख कार्य है । मनुष्य अपनी निजी जिंदगी . सार्वजनिक क्षेत्रों में भी इन सारी बातों को ध्यान में रखे तो अपनी जिंदगी के साथ दूसरों के जिंदगी में भी खुशहाली बॉट सकता है । ये सारी बातें अपनी आदत व्यवहार से आवश्यक परिवर्तन कर पारिवारिक जीवन के साथ ही दूसरों को भी प्रेरित कर सकता है ।उन्होंने काम करने के विभिन्न चरण के संबंध में एक सरल उदाहरण देकर समझाया कि किस तरह गॉव में एक महिला पानी से भरे घडे को सिर में रखने के पहले घूटने में रखकर आसानी से सिर में रख पाती है ।इसी तरह जूते के लैस बांधने का आसान तरीका अपनाया जा सकता है जिससे शरीर को कम से कम तनाव देकर किया जा सकता है।अपने जीवन के अनुभव से भी उन्होंने उपस्थित जनों को अवगत कराया ।उपस्थित जनों ने सवाल जवाब कर अपने

संकाओं का भी समाधान किये । इस अवसर पर श्री आर एल ढीढी जी जी का स्वागत श्री मती राज कुमारी दास ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री बी पी राउतराय जी के परिवार की ओर से था। **(टिप्स क 31):- 241 वें गुरू वंदना (दिनॉक 15 - 09 - 2008)**

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 241 वें गुरू वंदना के अवसर पर 15 सितम्बर 2008 को श्री गजेन्द्र साय संगणक सहायक . अपेक्स बैक भिलाई " कंप्युटर को जानें – सदुपयोगी कैसे ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि आज कम्प्यूटर का युग है । जिंदगी के प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर का सहारा लेना आवश्यक हो गया है । ऐसी अवस्था में बच्चों से बुजुर्ग प्रत्येक को कम्प्यूटर की जानकारी जरूरी है ।कम्प्यूटर का सदुपयोग के साथ दुरूपयोग आज किसी से छिपी नहीं है ।आज हमारे लिये चुनौति है कि कम्प्यूटर के सदुपयोग को प्रोत्साहित कर इसके दुरूपयोग को कैसे निरूत्साहित करें ।मानवता के शुभ चिंतक एवं जानकार सज्जन अपनी उत्तरदायित्व को समझ कर इस चुनौति को अवसर में बदल कर मानवता की सेवा में अपना अमूल्य योगदान प्रदान कर सकते हैं ।कम्प्यूटर के सदुपयोग हेतु जन जागृति का होना अति आवश्यक है । आज कम्प्यूटर के क्षेत्र में विभिन्न लेवल में असीमित अवसर प्राप्त है ।कक्षा 10 से लेकर पोस्ट ग्रेजुएट तक के विद्यार्थी जिरो लेवल . ए लेवल . बी लेवल .सी लेवल के विभिन्न कोर्स के पढाई आसानी से कर सकते हैं ।इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न प्रकार की जानकारियां उपलब्ध है .जिसका सदुपयोग आसानी से किया जा सकता है ।इंटरनेट में बहुत सारी बंधित साइट है जो बच्चों को गलत दिशा में ले जा सकता है । ऐसे में मॉ बाप .अभिभावकों का कर्तव्य हो जाता है कि अपने बच्चों पर विशेष निगरानी रखें. कि बच्चा कम्प्यूटर में क्या कर रहा है ।इसके लिये बच्चों के साथ ही मॉ बाप को भी कम्प्यूटर का ज्ञान होना जरूरी है ।उन्होंने कम्प्यूटर क्वीज आयोजन करने का भी सलाह दिये.जिससे जानकारी के साथ ही प्रोत्साहन भी मिल सके ।अपने जीवन के अनुभव से भी उन्होंने उपस्थित जनों को अवगत कराया ।उपस्थित जनों ने सवाल जवाब कर अपने संकाओं का भी समाधान किये । इस अवसर पर श्री गजेन्द्र साय जी का स्वागत श्री मोहन लाल भतरिया ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री शोभा राम बघेल जी एवं श्री लखन लाल डाहरे जी के परिवार की ओर से था।

(टिप्स क 32):- 242 वें गुरू वंदना (दिनॉक 22 - 09 - 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 242 वें गुरू वंदना के अवसर पर 22 सितम्बर 2008 को श्री मती गीता कुर्रे सुशिक्षित मार्ग दर्शिका भिलाई " बच्चों के परिवरिश एवं पढाई लिखाई में मॉ की अहम भूमिका – कब और कैसे ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि एक मॉ की भूमिका माली की तरह होता है . जो बीज रोपने से ले कर पेड पौधे को हमेशा फलते फूलते देखना पसंद करता है । मॉ के कोंख से ही बच्चे की परिवरिश शुरू हो जाती है . जिसकी अनुभव एक मॉ को ही हो सकता है ।गर्भवती मॉ अपना खान पान .रहन सहन .आदत व्यवहार आदि का परिपालन कोंख में पल रहे बच्चे के हित को ध्यान में रख कर ही करती है । उसके मन में कभी लडकी या लडका के भेदभाव का ख्याल आ ही नहीं सकता । बच्चे के रोकर मॉ के कोंख से बाहर आने के संकेत से खुशी का अनुभव एक मॉ ही कर सकती है । मॉ ही बच्चे के प्रथम गुरू है ।हॅसना .रोना

. खाना पीना . खडा होना . गिरना संभलना . चलना दौडना ये सारी कियायें बच्चे सर्व प्रथम मॉ से ही सिखते हैं । अतएव बच्चों के परिवरिश में मॉ की अहम भूमिका है यह सर्व विदित है ।पढाई लिखाई में भी मॉ की भूमिका को कभी भी कम आंका नहीं जा सकता । बच्चे की जरूरत व चाहत को मॉ ही भली भॉति समझ सकती है ।बच्चे के साथ कब और कैसा व्यवहार किया जाय । यही सबसे बडी अहम बात है । बच्चे के बाल स्वभाव . बाल कियाओं को समझ कर ही बच्चों को आगे सत मार्ग में चलने के लिये प्रेरित किया जा सकता है । बच्चों को सहज रूप से प्रेरित करें . अत्याधिक दबाव ठीक नहीं है . पढाई लिखाई . खेल कूद व अन्य कार्यां में नियमितता लाने का प्रयास करें . बच्चे के आत्म स्वाभिमान का हमेंशा ध्यान रखें . बच्चे के कार्यों में आवश्यक निगरानी रखने की कोशिष करें अच्छे कार्यो के लिये हमेशा प्रोत्साहित करें . अच्छे लोगों से संपर्क करायें ।इससे बच्चे अवश्य ही आगे उन्नति करेंगे । उन्होंने अपने मातृत्व जीवन के अनुभव से अवगत कराने के साथ ही उत्सुक उपस्थित जनों के संकाओं का भी समाधान बडी ही सरलता पूर्वक किये । इस अवसर पर श्री मती गीता कुर्रेजी का स्वागत श्री मती वेदबाई गायकवाड ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री राजू लाल बंजारे जी के परिवार की ओर से था।

(टिप्स क 33):- 243 वें गुरू वंदना (दिनॉक 29 - 09 - 2008)

टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम में गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **243** वें गुरू वंदना के अवसर पर **29** सितम्बर **2008** को गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **243** वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री खगेश कोसरिया संचालक . जीया इंडस्ट्रीस हथखोज भिलाई " वर्तमान परिवेश में स्व रोजगार की सार्थकता - कहॉ तक ? " विषय पर अपने अनुभव का टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि लक्ष्य प्राप्ति के लिये सपना देखना जरूरी होता है । सपने को साकार करने में परिवार के सदस्यों .अभिभावकों के साथ शादी के बाद पति अथवा पत्नी का सहयोग . मार्गदर्शन . प्रोत्साहन के होने से लक्ष्य प्राप्ति में आसानी हो जाता है । लक्ष्य निर्धारण के लिये अपनी क्षमता . कमजोरियों . प्राप्त अवसर व संभावित चुनौतियों से अवगत होना जरूरी हो जाता है । किसी भी प्रकार के बदलाव से जोखिम तो आ ही जाता है । लेकिन बिना जोखिम लिये फल की प्राप्ति भी नहीं हो सकती ।स्व रोजगार का सपना भी जोखिम लिये हुआ होता है । स्व रोजगार के लिये बाजार का सर्वेक्षण के साथ विशेष प्रकार के स्व रोजगार का चुनाव . स्थान के चुनाव के साथ योजना बद्ध तरीके के साथ स्थापित करने से ही हौसला बढता है । विपरित परिस्थितियों में भी हौसला बनाकर रखना आवश्यक है । परिवार के साथ संबंधित जन इसमें आवश्यक सहयोग कर सकते हैं ।उन्होंने आगे बताया कि स्व रोजगार के लिये उचित योजना . जोखिम उठाने की क्षमता . काम के प्रति जुनून . प्रोडक्ट का कास्ट निर्धारण . बाजार का विश्लेषण . लेन देन में आवश्यकतानुसार व्यवहार . विश्वास का जीतना . लेन देन में सतर्कता . समय का सदुपयोग आदि का होना आवश्यक है । उन्होंने बताया कि स्व रोजगार कठिन जरूर है लेकिन असंभव नहीं है । उपस्थित जनों के जिज्ञासा को अपने ही अनुभव का उदाहरण दे कर उत्साह जनक माहौल बना दिये । साथ ही भविष्य में सहयोग देने का आश्वासन भी दिये । इस अवसर पर श्री खगेश कोसरिया जी का स्वागत पं . गिरिवर बंजारे कोसरंगी (रायपुर) वाले ने चंदन का टीका लगाकर किया।गुरू प्रसाद श्री त्रिलोचन डाहरे जी एवं श्री हेमंत सिंह कुर्रे जी के परिवार की ओर से था।